Topic 63

हलन्त पुंल्लिंग प्रकरण हकारान्त शब्द रूप - 1

हो ढः ।

हस्य ढः स्याज् झलि पदान्ते च ।
लिट्, लिड् । लिहौ । लिहः । लिड्भ्याम् ।
लिट्त्सु, लिट्सु

झल् परे होने पर या पद के अन्त में हकार के स्थान पर ढकार हो जाता है। उदाहरण के लिए 'लिह् + सु में सर्वप्रथम हल्ङ्याब्भ्यः द्वारा अपृक्त सकार का लोप हो जाता है। तत्पश्चात् पदान्त होने से हकार को ढकार होकर 'लिढ्' रूप बना। इस अवस्था में ढकार को झलां से डकार और अवसान डकार को 'वाऽवसाने' से विकल्पतः टकार हो जाता है, अतः 'लिट्' और 'लिड्' - ये दो रूप बनते हैं।

दादेर्धातोर्घः । ८।२।३२

झलि पदान्ते चोपदेशे दादेर्धातोर्हस्य घः ।

उपदेश में दकारादि धातु के हकार को झल् परे होने पर या पदान्त में घकार आदेश होता है।

एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः ।

धात्ववयवस्यैकाचो झषन्तस्य बशो भष् स्यात्, से ध्वे पदान्ते च । धुक्, धुग् । दुहौ । दुहः । धुग्भ्याम् । धुक्षु ।

सकार या 'ध्व' परे होने पर अथवा पदान्त में धातु के अवयव झषन्त एकाच् के (वाला समुदाय, जिसके अन्त में किसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो) ब, ग, ड और द के स्थान पर भ, घ, ढ और ध आदेश हो।